2

ठाकुर का कुआँ

शिक्षक निर्देश: पाठ को रोचक बनाने हेतु सॉफ्टवेयर का प्रयोग करें।

समानता व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है। जिस समाज में असमानताएँ विद्यमान रहती हैं उस समाज का प्रगति करना अत्यंत कठिन है। प्रस्तुत कहानी बीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक देश में व्याप्त सामाजिक असमानताओं को प्रतिबिंबित करती है।

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सख़्त बदबू आई। गंगी से बोला, "यह कैसा पानी है? मारे **बास** के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा हुआ पानी पिलाए देती है!"

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था; बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लाई, तो उसमें बू बिल्कुल न थी; आज पानी में बदबू कैसी? लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। ज़रूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा। दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस **सिरे** पर है; परंतु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? चौथा कुआँ गाँव में है नहीं। जोखू कई दिनों से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला, "अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूँ।"

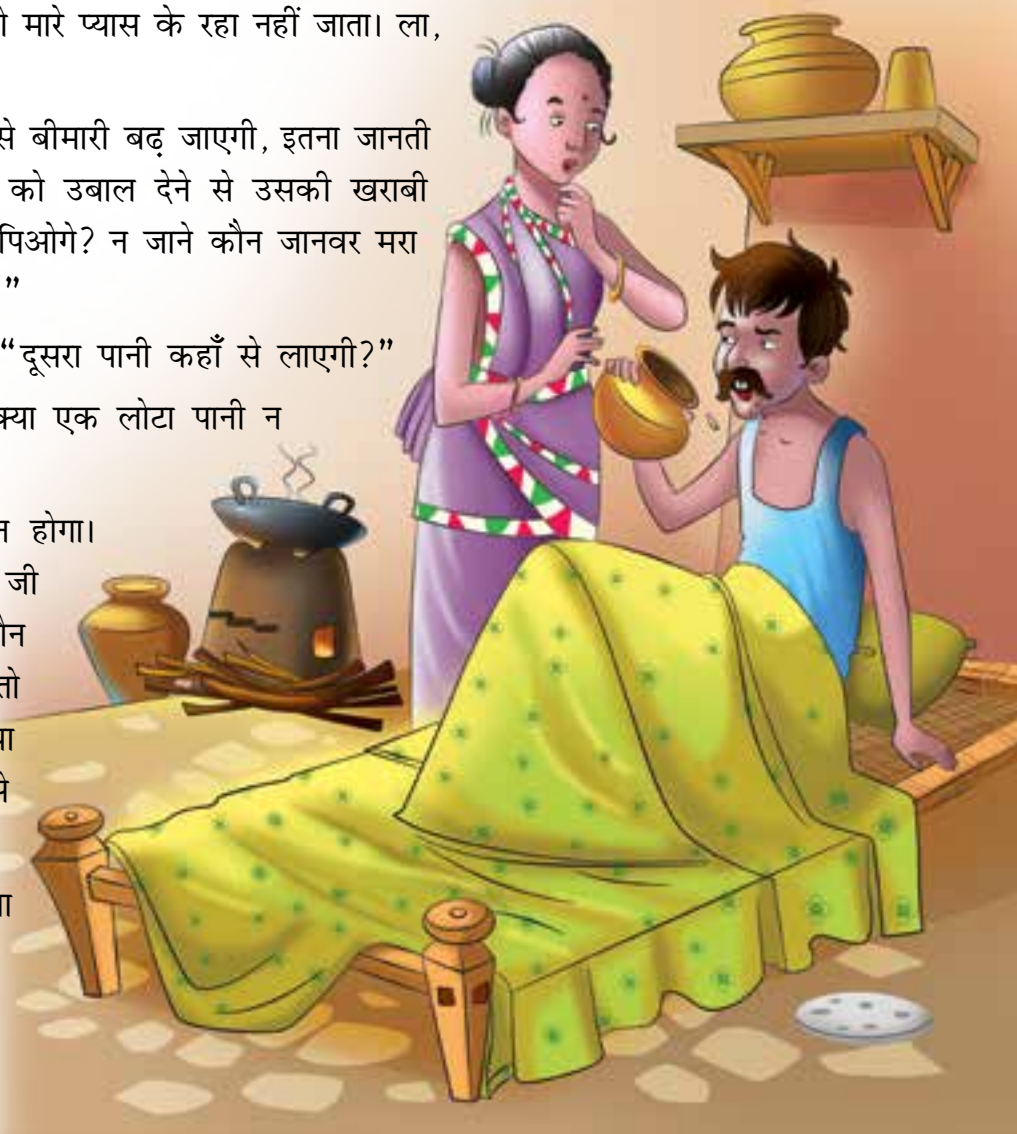

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी, इतना जानती थी; परंतु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली, "यह पानी कैसे पिओगे? न जाने कौन जानवर मरा है! कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।"

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, "दूसरा पानी कहाँ से लाएगी?"

"ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?"

"हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई **दुआर** पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या

जवाब देती; किंतु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-माँदे मज़दूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाज़े पर दस-पाँच **बेफ़िक्र** जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो अब ज़माना न रहा है, न मौक़ा। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं, "कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक ख़ास मुकद्दमे में रिश्वत दे दी और साफ़ निकल गए।" "कितनी अक्लमंदी से एक **मार्के** के मुकद्दमे की नकल ले आए। **नाज़िर** और **मोहतमिम**, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता; कोई सौ। यहाँ बेपैसे-कौड़ी से नकल उड़ा दी। काम करने का ढंग चाहिए।" इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौक़े का इंतज़ार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोक नहीं; सिर्फ़ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल **रिवाज़ी पाबंदियों** और मजबूरियों पर चोटें करने लगा—हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँचे हैं? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं? यहाँ तो जितने हैं, एक-से एक छँटे हैं? चोरी ये करें, जाल-फ़रेब ये करें, झूठे मुकद्दमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिए की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित जी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, **मजूरी** देते नानी मरती है। किस बात में हमसे ऊँचे। हाँ, मुँह से हमसे ऊँचे हैं। हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे हैं! कभी गाँव में आ जाती हूँ, तो रसभरी आँखों से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परंतु घमंड यह कि हम ऊँचे हैं!

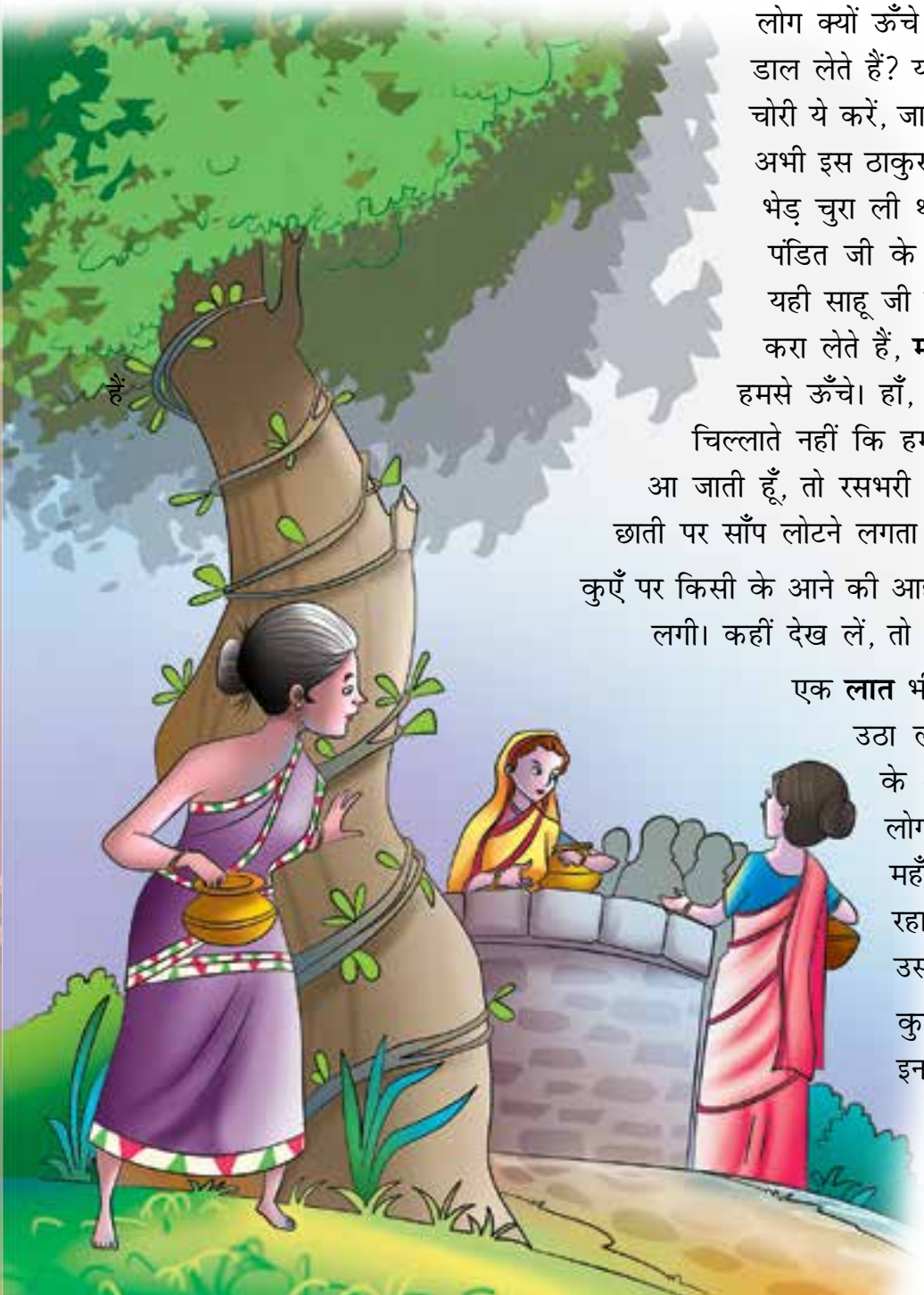

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख लें, तो गज़ब हो जाए!

एक **लात** भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अँधेरे **साए** में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर। बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसलिए कि उसने **बेगार** न दी थी! उस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं।

कुएँ पर दो स्त्रियाँ पानी भरने आई थीं। इनमें बातें हो रही थीं।

"खाना खाने चले और हुकुम हुआ कि ताज़ा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं हैं।"

"हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।"

"हाँ, यह तो नहीं हुआ कि **कलसिया** उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताज़ा पानी लाओ, जैसे हम **लौंडियाँ** हों।"

"लौंडिया नहीं तो और क्या हो तुम? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं? दस-पाँच रुपए छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौंडियाँ कैसी होती हैं।"

"मत लजाओ, दीदी! **छिन भर** आराम करने को जी तरस कर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता। यहाँ काम करते-करते मर जाओ; पर किसी का मुँह ही नहीं सीधा होता।"

दोनों पानी भरकर चली गईं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ के जगत के पास आई। बेफ़िक्र चले गए थे। ठाकुर भी दरवाज़ा बंद कर अंदर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए राजकुमार किसी ज़माने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया होगा। गंगी दबे पाँव कुएँ के जगत पर चढ़ी। विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दाएँ-बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा, जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सूराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर माफ़ी या **रिआयत** की रत्ती-भर उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मज़बूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता! ज़रा भी आवाज़ न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा **शहजोर** पहलवान इतनी तेज़ी से उसे न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाज़ा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में **हलकोरे** की आवाज़ें सुनाई देती रहीं।

"कौन है, कौन है?" पुकारते हुए ठाकुर कुएँ की तरफ़ आ रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी। घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाए वही मैला-गंदा पानी पी रहा है।

–प्रेमचंद

हिंदी साहित्य के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880, लमही, वाराणसी (उ० प्र०) में हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य में अद्‌वितीय योगदान दिया है। *गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि, सेवासदन* आदि उनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं। इनका देहांत 8 अक्तूबर, 1936 को हुआ। इनके सम्मान में भारतीय डाकतार विभाग द्‌वारा एक टिकट जारी किया गया।

शब्दकोश

शब्दार्थ

बास – बदबू (bad smell)
सिरा – छोर (end)
दुआर – द्वार; दरवाज़ा (door)
बेफ़िक्र – निश्चिंत (लोग) (careless)
मार्का – व्यापार-चिह्न (trademark)
नाज़िर – लिपिकों का प्रधान अधिकारी (warden)
मोहतमिम – प्रबंधक (manager)
रिवाज़ी – रीतिगत (customary)
पाबंदी – रोक, प्रतिबंध (interdict, ban)
मजूरी – मज़दूरी (wages)
लात – पैर (foot)
साया – आड़ (concealment)
बेगार – जबरन काम लेना (forced labour)
कलसिया – छोटा कलश (urn)
लौंडिया – दासी (maid servant)
छिन भर – क्षण भर (for a moment)
रिआयत – छूट (concession)
शहजोर – शक्तिशाली; ताकतवर (powerful)
हलकोरा – हिलकोरा; छोटी लहर (ripple)

नई वर्तनी–मूल वर्तनी

परंतु	–	परन्तु	**पाबंदी**	–	पाबन्दी	**अंदर**	–	अन्दर
बंद	–	बन्द	**पंडित**	–	पण्डित	**फंदा**	–	फन्दा
ब्राह्मन	–	ब्राह्मन	**घमंड**	–	घमण्ड	**धड़ाम**	–	धड़ाम्
कंधा	–	कन्धा	**धक-धक**	–	धक्-धक्	**गंदा**	–	गन्दा
मुकद्दमा	–	मुकद्दमा	**मरद**	–	मर्द			

अन्य भाषाओं के शब्द

सख़्त, मज़दूर, बेफ़िक्र, मैदान, बहादुरी, ज़माना, मौक़ा, ख़ास, साफ़, अक्लमंदी, नाज़िर, मोहतमिम, इंतज़ार, सिर्फ़, बदनसीब, रिवाज़ी, पाबंदी, मजबूरी, फ़रेब, गज़ब, हुकुम, ताज़ा, एहसान, दरवाज़ा, माफ़ी, रिआयत, उम्मीद, मज़बूत, आहिस्ता, ज़रा, आवाज़, शहजोर, तरफ़।

देखें हमने क्या सीखा

पाठ से

मौखिक (Speaking Skills)

1. जोखू पानी क्यों नहीं पी पा रहा था?
2. गंगी पानी भरने के लिए कब जाती थी?
3. पानी में बदबू का गंगी ने क्या कारण बताया?
4. क्या अंत में गंगी पानी भरने में सफल हुई?

लिखित (Writing Skills)

लघूत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. गाँव में कुल कितने कुएँ थे?

2. ठाकुर के दरवाज़े पर कौन लोग जमा थे?

3. गंगी कहाँ बैठकर मौक़े का इंतज़ार करने लगी?

4. अंततः जोखू ने कौन-सा पानी पिया?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1. गंगी जोखू को पानी पीने से क्यों मना कर रही थी?

2. जोखू ने गंगी को कौन-सा कड़वा सत्य बताया?

3. कहानी में 'बदनसीब' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है तथा क्यों?

4. "विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था।" इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।

पठित गद्यांश प्रश्न (Comprehension Questions)

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

(क) बीमार व्यक्ति का क्या नाम था?

(i) रवि ☐ (ii) किशन ☐ (iii) जोखू ☐

(ख) किसके दरवाज़े पर लोग जमा थे?

(i) गंगी ☐ (ii) जोखू ☐ (iii) ठाकुर ☐

(ग) ठाकुर ने क्या चुराया था?

(i) धन ☐ (ii) भेड़ ☐ (iii) गाड़ी ☐

(घ) काम करा लेते हैं, ... देते नानी मरती है।

(i) मंजूरी ☐ (ii) मजबूरी ☐ (iii) मजूरी ☐

2. **'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए–**

(क) खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी– यह गंगी को पता था। ☐

(ख) जोखू ने गंगी को ठाकुर के कुएँ पर जाने के लिए मना किया। ☐

(ग) साहू जी के घर में बारहों मास जुआ होता था। ☐

(घ) जोखू महीनों लहू थूकता रहा। ☐

3. **दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए–**

उबाल • जगत • दरवाज़ा • जानवर • अमृत

(क) ज़रूर कोई ..... कुएँ में गिरकर मर गया होगा।

(ख) पानी को ..... देने से उसकी खराबी जाती रहती है।

(ग) ..... चुरा लाने के लिए राजकुमार किसी ज़माने में गया था।

(घ) एकाएक ठाकुर साहब का ..... खुल गया।

(ङ) गंगी ..... से कूदकर भागी जा रही थी।

भाषा से

1. **रंगीन शब्दों के स्थान पर मानक शब्दों का प्रयोग कर वाक्य दोबारा लिखिए–**

(क) मगर दूसरा पानी आवे कहाँ से? .....

(ख) दूर से लोग डाँट बताएँगे। .....

(ग) मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ। .....

(घ) कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता। .....

(ड़) यहाँ बेपैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। .....

2. **दिए गए शब्दों के वचन बदलकर पुनः लिखिए–**

लोटा	–	.....	बात	–	.....
कुआँ	–	.....	मुकद्दमा	–	.....
बीमारियाँ	–	.....	पाबंदियाँ	–	.....
लाठी	–	.....	महीना	–	.....

3. **दिए गए शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए–**

बदबू	–	.....	बदनसीब	–	.....
बीमारी	–	.....	फ़रेब	–	.....
ग़रीब	–	.....	हुकुम	–	.....
बेफ़िक्र	–	.....	एहसान	–	.....

मूल्यपरक प्रश्न/उच्चस्तरीय बौद्धिक कौशल (VBQs/HOTS)

1. क्या ठाकुर जैसे लोगों का नीची जाति के समझे जाने वाले लोगों को पानी भरने से मना करना उचित था?
2. जाति-आधारित भेदभाव के किसी समाज पर क्या दुष्प्रभाव होते हैं?
3. गंगी और जोखू में से किसी को नहीं पता था कि पानी को उबालकर उसे शुद्ध किया जा सकता है। क्या उनके ग़रीब और तिरस्कृत होने की वजह उनका अनपढ़ होना नहीं था?

भाषा कौशल गतिविधियाँ (Subject Enrichment Activities)

रोचक क्रियाकलाप (Interesting Activities)

1. 'समानता का अधिकार' विषय पर कक्षा में सामूहिक चर्चा कीजिए।
2. भारत सरकार ने असमानता खत्म करने के लिए कई नियम-कानून बनाए हैं। इनके बारे में इंटरनेट की सहायता से जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. यदि ठाकुर गंगी को कुएँ से पानी भरते हुए देख लेता तो कहानी का अंत किस प्रकार होता? सोचकर लिखिए।

आइए लेख सुधारें (Let's Improve Handwriting)

पाठ से देखकर "दोनों पानी ..... साफ़ हुआ।" का सुंदर लेखन कीजिए।